ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

Volume 11, Issue 2, March 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

IMPACT FACTOR: 7.583

| www.ijarasem.com | ijarasem@gmail.com | +91-9940572462 |

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 7.583 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 11, Issue 2, March-April 2024 |

इतिहास लेखन की आधुनिक प्रवृत्ति एवं इसकी प्रासंगिकता (भारत के विशेष संदर्भ में)

चतरा राम मेघवाल

सहायक आचार्य, इतिहास

सारांश

पश्चिमी विद्वानों ने भारत के इतिहास को आधुनिक रूप में लिखने के लिए गहन प्रयास किए। उस समय देश में ऐतिहासिकता के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की तरह, अनुसंधान और लेखन को एक नए तरीके से शुरू किया गया था। यह सराहनीय था क्योंकि पिछले एक हजार वर्षों में इस दिशा में कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं हुआ था, केवल भारतीयों द्वारा राजतरंगिणी के निर्माण को छोड़कर। वास्तव में, किसी भी देश का इतिहास, उसकी विभिन्न परंपराओं, मान्यताओं और किंवदंतियों में बसा होता है। इसे उस देश या जाति की भावी पीढ़ियों की कहानियों और संघर्षों का सामूहिक लेखा कहा जा सकता है। आज इतिहास के पुनर्लेखन के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। यह संकल्प केवल इतिहासकारों में ही नहीं, बल्कि पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए।

मूल शब्द – इतिहास लेखन, पश्चिमीकरण, इतिहास लेखन की प्रासंगिकता, आधुनिक इतिहास।

परिचयः

भारत का आधुनिक लिखित इतिहास ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन की स्थापना के साथ आधुनिक रूप में लिखने की परंपरा शुरू हुई। कंपनी के शासन के दौरान, देश के राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, शैक्षिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में पश्चिमीकरण की नई खोज, व्याख्याएं और प्रक्रियाएं आरंभ की गईं। इनमें से कुछ भारतीयों के लिए लाभकारी साबित हुए, जबकि कुछ हानिकारक भी थे। फिर भी, ये प्रयास जारी रहे और वॉरेन हेस्टिंग्स के समय में सत्ता पूरी तरह से अंग्रेजों के हाथों में पहुंच गई, जिससे देश में सभी कार्य उनकी इच्छाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप होने लगे। लेकिन इतनी मेहनत के बाद भी, जो इतिहास उन्होंने तैयार किया, उसमें भारत की ऐतिहासिक घटनाओं और तारीखों को इस तरह से प्रस्तुत किया गया कि आज कई भारतीय विद्वानों के लिए उसकी वास्तविकता संदिग्ध हो गई है। फिर भी, जो दुविधा 200 वर्षों में अंग्रेज इस क्षेत्र में नहीं ला सके, वह पश्चिमी–उन्मुख भारतीय इतिहासकारों ने स्वतंत्र भारत के 50 वर्षों में दिखाई। वास्तव में, इतिहास को विभिन्न परंपराओं, मान्यताओं, महिमा कहानियों और किसी भी

देश या जाति के महापुरुषों के संघर्षों का सामूहिक खाता कहा जाता है, ताकि उस देश या जाति की भावी पीढ़ी प्रेरणा ले सके। जबकि भारत का इतिहास आज भी समृद्ध है, निराशा इस दृष्टिकोण से उत्पन्न होती है क्योंकि यह भविष्य की पीढ़ी को प्रेरणा देने में असमर्थ है। इससे मिलने वाली जानकारी केवल यह दर्शाती है कि इस देश में कभी किसी का स्थायी स्वामित्व नहीं रहा। यहां एक के बाद एक आक्रमणकारी आते रहे और उन्होंने पिछले आक्रमणकारियों को परास्त कर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। यह देश एक धर्मशाला की तरह प्रतीत होता है, जहाँ कोई भी जब चाहे आया, कब्जा किया और मालिक बनकर बैठ गया।

अध्ययन के उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उद्देश्य है–

- भारत में आधुनिक इतिहास लेखन का वर्णन करना
- आधुनिक इतिहास लेखन की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना
- आधुनिक एवं पुरातन इतिहास का तुलनात्मक अध्ययन करना

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रहः

प्रस्तुत अध्ययन के लिए आधुनिक विश्लेषण अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए इतिहास के तथ्यों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक सूचनाओं का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, सालात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्री और विभिन्न संचार माध्यम और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

इतिहास लेखन की शुरुआतः

देश में इतिहास लेखन के क्षेत्र में, अन्य क्षेत्रों की तरह, शोध और लेखन के प्रयासों को एक नए तरीके से शुरू किया गया। इस दृष्टिकोण से सर विलियम जोन्स, कोलचूक, जॉर्ज टर्नर, जेम्स प्रिंसेप, और परजिटर जैसे नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण कार्य कलकत्ता के उच्च न्यायालय में कार्यरत तत्कालीन न्यायाधीश सर विलियम जोन्स द्वारा किया गया था। उन्होंने भारत के इतिहास को आधुनिक तरीके से लिखने के लिए एक नई शोध प्रक्रिया शुरू की। इस काम में उन्हें कंपनी के तत्कालीन गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स का पूरा समर्थन मिला। परिणामस्वरूप, एक व्यापारिक कंपनी भारत में एक मजबूत राजशाही बन गई। 1757 में प्लासी के युद्ध के परिणामों से उत्साहित होकर, न केवल कंपनी के लोग, बल्कि ब्रिटिश शासकों ने भी

ईस्ट इंडिया कंपनी के माध्यम से भारत पर ब्रिटिश राज्य स्थापित करने के सपने को साकार करने की पूरी कोशिश की।

इतिहास लेखन के लिए अंग्रेजों के प्रयासः

भारत के इतिहास को आधुनिक रूप में लिखने के लिए कंपनी सरकार ने अपनी इच्छानुसार ब्रिटिश इतिहासकारों के माध्यम से गहन प्रयास किए। इन इतिहासकारों ने भारत की प्राचीन सामग्री, जैसे ग्रंथ, शिलालेख आदि, को खोजा और उनका अध्ययन किया। इसके साथ ही, भारत आने वाले विदेशी यात्रियों के यात्रा विवरणों का अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और उनका भी अध्ययन किया गया। लेकिन भारतीय स्रोतों से बहुत कम ऐसी सामग्री मिली जो उनके लिए उपयोगी हो सकती थी। इस वजह से उन्होंने इसे अनुचित माना और इसे अप्राकृतिक करार दिया।

भारत के इतिहास लेखन में कमियांः

भारत में इतिहासलेखन में कुछ त्रुटियां थी। अंग्रेजों ने स्वविवेक के आधार पर भारत के इतिहास को लिखने की दृष्टि से कई मनगढंत निष्कर्ष निकाले। शक्ति के बल पर उन्हें बढ़ावा देना । पाप्त करना शुरू कर दिया। इनमें से कुछ उल्लेखनीय

1. प्राचीन भारतीय विद्वानों में ऐतिहासिक लेखन क्षमता का अभाव था।
2. भारत में विशुद्ध रूप से ऐतिहासिक अध्ययन के लिए बहुत कम मात्रा में सामग्री उपलब्ध थी।
3. भारत के प्राचीन विद्वानों के पास जनगणना की कोई निश्चित और ठोस विधि नहीं थी।
4. भारत के इतिहास की अधिक सटीक तारीखें वे थीं जो भारत से नहीं बल्कि विदेशी स्रोतों से पाई गईं।
5. भारत के इतिहास में सबसे पुरानी अवधि 2500–3000 ईसा पूर्व तक की है।
6. आर्य लोग भारत में बाहर से आए, उन्होंने इस क्षेत्र के पूर्व निवासियों को युद्धों में हराया, अपना राज्य स्थापित किया और हारे हुए लोगों को गुलाम बनाया।
7. प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में वर्णित राजवंश और प्राचीन साम्राज्य अतिशयोक्ति के कारण अप्राकृतिक और अविश्वसनीय माने गए हैं।
8. रामायण, महाभारत और अन्य प्राचीन भारतीय ग्रंथ मिथक हैं।
9. ब्रिटिश शासन के आने से पहले भारत का शासन कभी भी एक केंद्रीय सत्ता के अधीन नहीं था।उपर्युक्त निष्कर्षों का प्रसार करके, उन्होंने न केवल भारत के सभी प्राचीन साहित्य को खारिज कर दिया, साथ

ही साथ आरतीय पुराणी, धार्मिक ग्रंथी और प्राचीन साहित्य में सुलझ सभी ऐतिहासिक तथ्यों और कहानियों को अप्राकृतिक और अविश्वसनीय माना जाता है।

इतिहास लेखन का विश्लेषणः

भारत में, जवाहरलाल नेहरू और उनके उत्तराधिकारियों ने कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियों को सत्ता में प्रवेश करने और इसे अपने नियंत्रण में लेने का अवसर दिया। एक राजनीतिक शक्ति के रूप में, माक्सवादी ज्यादा विकसित नहीं हो सके और मजदूर आंदोलन में भी पिछड़ गए। लेकिन इतिहास लेखन में उन्होंने अपनी पकड़ मजबूत बनाई। इसका एक मुख्य कारण ब्रिटिश और अमेरिकी शिक्षण संस्थानों के वामपंथियों से मिला समर्थन है। ये माक्सवादी भारत में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वास्तविक भावना के बौद्धिक उत्तराधिकारी हैं। उन्होंने भारतीय इतिहास को नकारात्मक दृष्टिकोण से देखने के लिए एक अभियान शुरू किया। ब्रिटिश शासकों की तरह, वे भी भारतीय इतिहास की अवमानना के लिए मुसलमानों का इस्तेमाल करते रहे हैं। उन्होंने मुस्लिम शासकों के पापों को छुपाने और हिंदू समाज और उसकी प्रणालियों की निन्दात्मक व्याख्या करने का काम किया है। माक्सवादी इतिहासकार भारत के युवाओं के बीच अपने इतिहास के प्रति तिरस्कार और अवमानना की भावना फैलाने की कोशिश कर रहे हैं।

वर्तमान में इतिहास लेखन की प्रासंगिकताः

इतिहास लिखने का कार्य आसान नहीं है, इसके लिए राज्य निर्धारण और साधनों की आवश्यकता होती है, लेकिन इतिहास लेखन का किसी भी राज्य की स्थापना पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इतिहास को फिर से लिखने के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। इस संकल्प को देश भर में फैले इतिहासकारों में देखा जाना चाहिए, इससे अधिक यह हमारे पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए। कुछ समय पहले, भारत के विद्वानों ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में स्कंदगुप्त पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोलते हुए, भारतीय इतिहास को फिर से लिखने पर जोर दिया यदि उन्होंने भारतीय इतिहास का फिर से लिखने पर जोर दिया, तो यह माना जा सकता है कि इस विषय को देश की प्राथमिकताओं में जोड़ा गया है। अब तक जो इतिहास लिखा गया है, वह भारतीय समाज में विभिन्न स्तरों पर असंतोष व्यक्त करता रहा है। कई लोगों ने स्थानीय स्तर पर अपना इतिहास लिखने की भी कोशिश की है।

लेकिन इस तरह के छिटपुट प्रयास भारतीय इतिहास में व्याप्त विसंगतियों को दूर नहीं कर सकते। यह काम योजनाबद्ध तरीके से होना चाहिए। प्रत्येक इतिहासकार को स्थानीय इतिहास से अपना शैक्षणिक जीवन शुरू करना आवश्यक होना चाहिए। इतिहास के खोत के रूप में, हमें अपने लोक साहित्य और लोक

स्मृति को भी उचित महत्व देना चाहिए। इसके आधार पर भारत का एक बड़ा और राष्ट्रीय इतिहास लिखा जा सकता है। इसके साथ ही यह भी आवश्यक है कि हम अपने दृष्टिकोण से अपना इतिहास लिखें। आधुनिक इतिहासलेखन की नींव भारत मैं अंग्रेजों ने रखी थी। उनका इतिहास लेखन से जुड़ा एक राजनीतिक उद्देश्य था। हमारे इतिहासकारों ने इस पर उचित ध्यान नहीं दिया। भारतीय इतिहास के पुनर्लेखन के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने इतिहास को अपने दृष्टिकोण से लिखे।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन से यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश शासन ने इतिहास लेखन के काम में पूरा सहयोग दिया, जबकि कंपनी ने उन लोगों को भी समर्थन और प्रोत्साहन दिया जिन्होंने भारतीय इतिहास से संबंधित बयानों और तथ्यों को अप्राकृतिक, अवास्तविक, अतिरंजित और सारहीन साबित करने की कोशिश की। पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भारतीय इतिहासलेखन के संदर्भ में तत्कालीन शासक ने उपरोक्त निष्कर्षों और मानदंडों के आधार पर आधुनिक रूप में भारत के इतिहासलेखन की रचना की थी। इतिहास लिखने का कार्य आसान नहीं हैय इसके लिए राज्य समर्थन और साधनों की आवश्यकता होती है, लेकिन इतिहास लेखन को किसी भी राज्य की स्थापना पर नहीं छोड़ा जा सकता है। इतिहास को फिर से लिखने के लिए व्यापक संकल्प की आवश्यकता है। इस संकल्प को देश भर में फैले इतिहासकारों में देखा जाना चाहिए, और इससे भी अधिक, इसे हमारे पूरे बौद्धिक वर्ग और समाज में देखा जाना चाहिए। इसलिए, भारतीय इतिहास को फिर से लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हम वर्तमान में सही और प्रामाणिक इतिहास लिखें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. ई. श्री धरन, इतिहासहलेखः एक पाठ्यपुतक, नई दिल्ली ओरियंटल ब्लैक स्वॉन, 2011
2. विपन चन्द्र भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय 19981
3. सुमित सरकार, आधुनिक भारतः 1885–1947, नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन, 2002
4. द्विजेन्द्र नारायण झा, प्राचीन भारतः सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की पड़ताल, दिल्ली ग्रन्थ शिल्पी, 20001
5. आधुनिक भारत के इतिहास के स्त्रोत, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

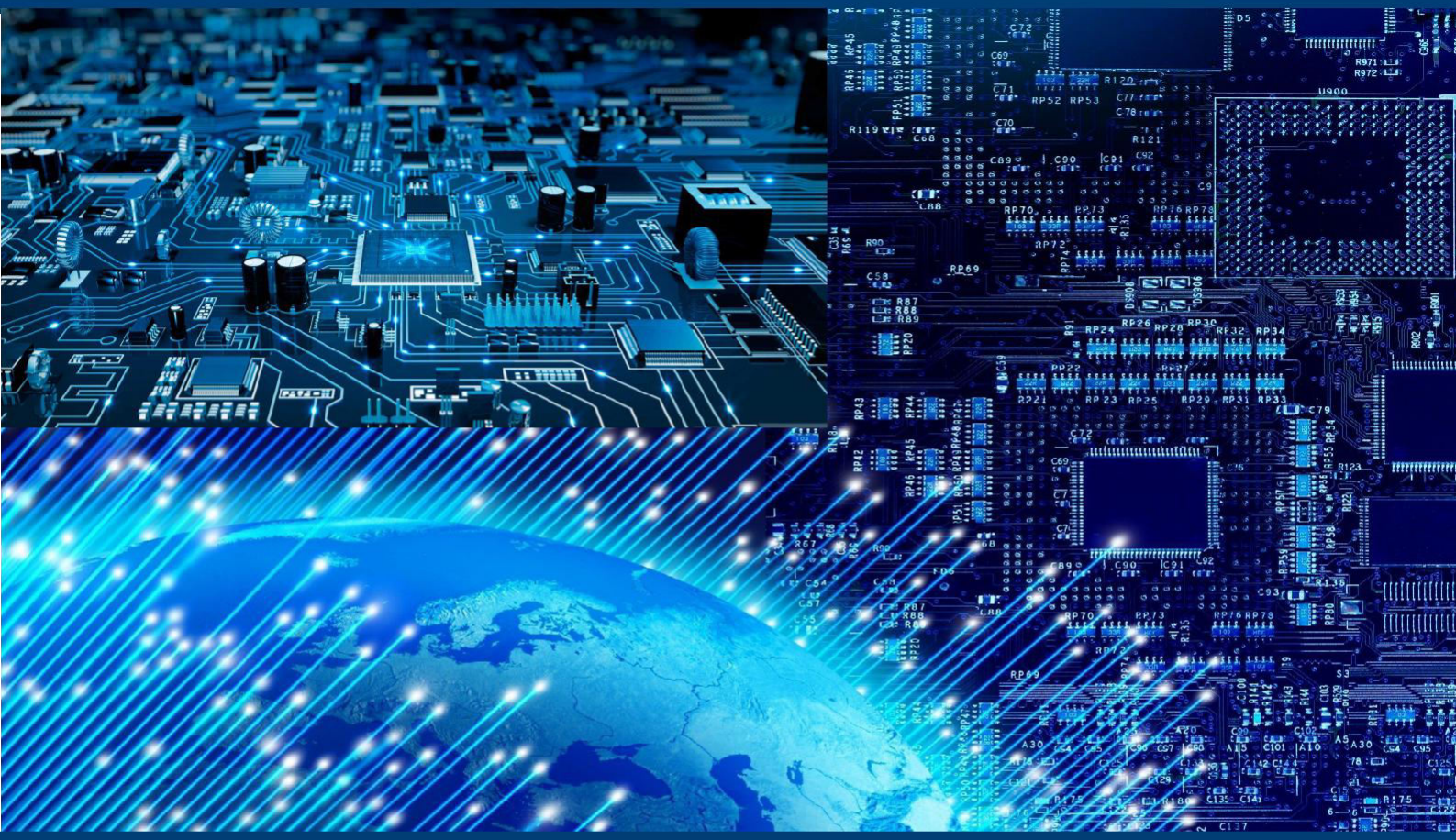

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |